संरक्षक की कलम से ...

प्रिय पाठकों

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी पर सिर्फ मानवमात्र ही नहीं अपितु समस्त जीवधारियों एवं पेड़-पौधों के लिए जल प्रकृति प्रदत्त एक आवश्यक, अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण तत्व है। जल जीवन का आधार है, अतः इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जल का उपयोग हम पेयजल, कृषि, उद्योग, स्वच्छता, ऊर्जा उत्पादन, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य एवं अन्य अनेक कार्यों में करते हैं। विभिन्न कार्यों में जल की महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जल का संरक्षण एवं संचयन करना हमारी नैतिक जिम्मेवारी बन जाती है। उल्लेखनीय है कि हमारे देश में जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है परंतु इसके समुचित संरक्षण, संचयन एवं प्रबंधन के अभाव में आज हमारे देश के कई हिस्सों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि एवं तीव्र शहरीकरण के कारण जल की बढ़ती मांग और प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन के कारण से भूजल स्तर में निरन्तर कमी हो रही है जिसके परिणामस्वरूप भूमि और जल की उपलब्धता निरंतर घटती जा रही है। यह एक चिंता का विषय है।

आज पूरा विश्व अनेक प्राकृतिक आपदाओं और चुनौतियों का सामना कर रहा है। इनमें जल भी है जो यद्यपि प्रकृति द्वारा सर्वसुलभ और सर्व-सहज तत्व है फिर भी इसके संरक्षण को लेकर विश्व के समस्त देश चिंतित हैं। आज हमारे देश में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में शुद्ध जल की उपलब्धता में निरंतर कमी आ रही है। विभिन्न स्रोतों से प्रदूषक भार बढ़ने के करण सतही और भूजल संसाधनों की गुणवत्ता निरन्तर खराब हो रही है। आज हमें ऐसे जल की आवश्यकता है जो मानव उपभोग, कृषि, उद्योग और पर्यावरण के लिए उपयुक्त एवं पर्याप्त हो।

आज ग्लोबल वार्मिंग, यानि वैश्विक तापवृद्धि के कारण पृथ्वी के तापमान में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है जिससे मौसम के रुख और हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस बदलाव के कारण सूखा, बाढ़ एवं तूफान आदि जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। इस ग्लोबल वार्मिंग के लिए काफी हद तक मानवीय गतिविधियां जिम्मेवार हैं। ग्लोबल वार्मिंग को जीवाश्म ईंधन की खपत कम करके, वनस्पतियों का संरक्षण करके, ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके कम कर सकते हैं।

हमारे देश के जल संसाधन, पेयजल एवं कृषि के साथ-साथ जलविद्युत उत्पादन, पशुधन उत्पादन, वानिकी, मत्स्य पालन, नौपरिवहन, मनोरंजक गतिविधियों और पारिस्थितिक आवश्यकताओं आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती मांगों को पूर्ण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि आज हमारे वैज्ञानिकों, अभियंताओं, प्रशासकों एवं नियोजकों के निरंतर प्रयासों से देश के जल संसाधनों के समुचित उपयोग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है तथापि जल गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारकों यथा जल प्रदूषण, जल की कठोरता, जल में खनिजों की अत्यधिक मात्रा आदि कारकों को नियंत्रित करके जल संसाधन प्रबंधन एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। आज व्यर्थ बहने वाले जल को सतही एवं भूजल जलाशयों में एकत्र करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

विगत 14 वर्षों से निरंतर प्रकाशित की जा रही प्रस्तुत पत्रिका का मुख्य उद्देश्य तकनीकी क्षेत्र में हो रहे शोध कार्यों की नित-नई जानकारी को हिंदी भाषा के माध्यम से आम-नागरिक तक पहुंचाना है। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा जल की प्रत्येक बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम-जनता को देने की आवश्यकता है। देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा क्योंकि इस संसाधन की सुरक्षा की जिम्मेवारी देश के हर नागरिक की है।

मुझे यह अवगत कराते हुए प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हिंदी में पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इन्हीं गतिविधियों का एक हिस्सा है। हमारा प्रयास रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे वैज्ञानिकगण, तकनीकी स्टाफ एवं अन्य सभी पदाधिकारी अपने रोजमर्रा के सामान्य प्रकृति के कार्यों में राजभाषा हिंदी का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर रहे हैं।

इस पत्रिका के लिए जिन प्रबुद्ध लेखकों ने अपने रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी लेख भेजकर हमें सहयोग दिया है मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त परामर्शदाता, समीक्षाकर्ता एवं संपादक मंडल के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की कामना करता हूं।

(डा. मनमोहन कुमार गोयल)